ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-5* June-2017
Innovation The Research Concept

गाँधी जी के विचार एवं आतंकवाद का उन्मूलन

कल्लन सिंह मीना
व्याख्याता,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
गंगापुर सिटी, राजस्थान

सारांश

महात्मा गाँधी जी विश्व शांति व मानव कल्याण के प्रणेता थे। गाँधीजी के विचार व्यापक, पवित्र, उदार व व्यावहारिक है अतिवादी नहीं। आज आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता, उग्र राष्ट्रवाद की भावना अन्तर्राष्ट्रीय शांति के लिए बहुत बड़ी समस्या पैदा कर रहे है। विश्व में बढ़ रही शस्त्रीकरण की प्रतिस्पर्द्धा, गृहयुद्ध, नक्सलवाद, आर्थिक मंदी, भुखमरी, बेरोजगारी, मानवाधिकारों का हनन आदि समस्याओं के समाधान के लिए गाँधीजी के विचारों का महत्व लगातार बढ़ रहा है। विश्व के राष्ट्र उनके विचारों को आत्मसात कर रहे है। आज आतंकवाद से विश्व के सभी देश प्रभावित व भयग्रस्त है। अतः गाँधी जी के सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, प्रन्यास, धर्म, शिक्षा, सामाजिक, राजनीति व आर्थिक आदि विचारों की प्रासंगिकता एवं उपादेयता है। इस विश्व व्यापी आतंकवाद समस्या का स्थायी समाधान कोई एक अतिवादी दृष्टिकोण अपनाने से संभव नहीं है बल्कि गाँधीजी के विचारों से ही संभव है।

मुख्य शब्द : महात्मा गाँधी, आतंकवाद, मानव कल्याण, अहिंसा।

प्रस्तावना

महात्मा गाँधी के विचार मानव कल्याण व विश्व शांति के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है, आज सम्पूर्ण विश्व आतंकवाद से जूझ रहा है। गाँधीजी के तीन ब्रह्मास्त्र थे – सत्य, अहिंसा एवं सत्याग्रह। इन के माध्यम से भारत को आजादी दिलवायी एवं गुलामी का जीवन जी रहे विश्व के अनेक देशों को आजादी के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा एवं संदेश दिया। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक आदि कोई भी क्षेत्र गाँधीजी के विचारों से अछूता नहीं रहा। महात्मा गाँधी विश्व शांति के प्रणेता व मानव कल्याण के प्रोधा थे। गाँधीजी का मत था कि मानवीय समस्याओं का समाधान मात्र अहिंसा से ही स्थायी रूप से किया जा सकता है। अहिंसा से भाईचारा, मित्रता, प्रेम, शांति, आदर व मानव कल्याण का संदेश मिलता है। अहिंसा, हिंसा से अत्यधिक शक्तिशाली व नैतिक है। अहिंसा, मन, वचन व कर्म तीनों से ही संभव है। किसी के प्रति मन में ईर्ष्या, कुविचार, मिथ्या भाषण, अपमान, व्यक्ति को संकट में डालना, अनैतिक कार्य करना, आवश्यकता से अधिक सम्पत्ति का संचय करना, गरीबों का शोषण करना हिंसा है। अहिंसा वह पवित्र साधन है जिसमें व्यक्ति शत्रु के प्रति स्नेह व मैत्री की भावना मन में रखता है। गाँधीजी की अहिंसा के तीन रूप है – जागृत अहिंसा, औचित्यपूर्ण अहिंसा एवं कायरों की अहिंसा। जागृत अहिंसा अत्यधिक शक्तिशाली, नैतिक व अन्तरात्मा की आवाज होती है। औचित्य पूर्ण अहिंसा का समय व परिस्थितियों के अनुसार ईमानदारी व दृढ़ इच्छा शक्ति के आधार पर पालन किया जाता है। गाँधीजी कायरों की अहिंसा को अहिंसा नहीं मानते, इसका पालन व्यक्ति भय और मजबूरी में करता है। गाँधीजी कायरों की अहिंसा से हिंसा को अच्छा मानते है। गाँधीजी अहिंसा को मानव कल्याण, सभ्यता, सामाजिक परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण मानते है। अहिंसा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक विकास के लिए अति आवश्यक है। गाँधीजी की अहिंसा का दृष्टिकोण व्यापक व व्यावहारिक है अतिवादी नहीं। उन्होंने कहा कि हिंसा के द्वारा हम शत्रु के शरीर पर जीत प्राप्त कर सकते है लेकिन अहिंसा के द्वारा हम शत्रु के शरीर व मन (आत्मा) दोनों पर विजय प्राप्त कर सकते है। उन्होंने हिंसा की हमेशा निंदा की, गाँधीजी के विचारों से प्रभावित होकर विश्व संसद संयुक्त राष्ट्र संघ ने गाँधीजी की जयन्ती 2 अक्टूबर को ''अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस'' के रूप में मनाने की घोषणा की। आज विज्ञान ने परमाणु बम बना कर विश्व को संकट में में डाल दिया है। अत्यानुधिक हथियार व बम के कारण आतंकवाद को बढावा मिला है लेकिन जिस देश ने अहिंसा को अपनी नीति एवं हथियार बना लिया है उसे परमाणु बम एवं आतंकवाद अपना दास नहीं बना सकता। गाँधीजी ने सत्य और अहिंसा के

बल पर भारत को स्वतंत्र कराया व विश्व के लिए अहिंसा का रास्ता बताया। उनका मत था कि सत्य ही ईश्वर है। अतः शत्रु पर विजय पाने के लिए सत्य का साधन उचित व पवित्र है। सत्य के द्वारा भय, असुरक्षा एवं दुष्टात्माओं पर विजय हासिल की जा सकती है। गाँधीजी ने सभी कठिन परिस्थितियों में अहिंसा और सत्य का पालन किया व सफलता हासिल की। उन्होंने कहा कि सत्य देश, काल व परिस्थितियों की सीमाओं से ऊपर व व्यापक है।

गाँधीजी ने दक्षिण अफ्रिका (सन् 1893 से 1914 तक) में रहकर भारतीयों के साथ हो रहे जातीय, नस्लीय व रंगभेद भेदभाव के विरूद्ध संघर्ष किया एवं अहिंसात्मक रूप से अपना विरोध जताया एवं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक समस्याओं के समाधान के लिए अनेक अहिंसक साधनों का प्रयोग किया– असहयोग, सविनय अवज्ञा, निष्क्रिय प्रतिरोध, उपवास, धरना आदि इन सभी साधनों को सत्याग्रह के रूप में मान सकते है। सत्याग्रह का अर्थ है सत्य के लिए आग्रह करना। विकट व अत्यधिक विपरीत परिस्थितियों में भी अहिंसक रहते हुए दुःख व कष्ट सहन करते हुए सत्य का आग्रह सत्याग्रह है। सत्याग्रही शत्रु के प्रति ईर्ष्या, द्वेष की भावना नहीं रखता, शत्रु से प्रेम करता है। मन, वचन व कर्म से किसी को दुःखी नहीं करता है, व्यक्तिगत जीवन में अहिंसक, धैर्यवान, निर्भीक, निष्ठावान, ईमानदार होता है। लोभ, लालच, छल–कपट, कीर्ति व यश की लालसा से दूर रहता है लेकिन आज आतंकवादी छल–कपट, लालच, यश, कीर्ति पाने के लिए आतंकवादी घटनाओं को अंजाम दे रहे है। गाँधीजी ने सत्याग्रह के माध्यम से दुश्मन व अत्याचार का विरोध किया एवं विश्व को नागरिक अधिकारों एवं स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। गाँधीजी ने धर्म को व्यापक रूप में माना है जो मानव समाज का आधार है मानवतावादी धर्म है, मानव कल्याण व सर्वजन सुखाय का धर्म है। वे धर्म के नाम पर फैले झूठे आडम्बर, पाखण्ड, अंधविश्वास, कट्टरता के सख्त विरोधी थे। उन्होंने कहा कि गरीब, दीन–दुःखी, असहाय, दलित, पीड़ित लोगों की सेवा करना ही सच्चा धर्म है। गाँधीजी धर्म व राजनीति को अलग नहीं मानते थे। धर्म के बिना राजनीति उचित नही है धर्म से ही राजनीति में नैतिकता व मानव कल्याण की भावना पैदा होती है। आज विश्व में धार्मिक कट्टरता के नाम पर आतंकवादी जो नंगा नाच कर रहे है, निर्दोष, गरीब लोगों की हत्या, सभ्यता व संस्कृति का विनाश व सार्वजनिक सम्पत्ति को नुकसान कर रहे है। यह गाँधीजी की दृष्टि से घोर पाप व घृणित कार्य है। अतः धर्म के नाम पर जो आतंकवाद विश्व में फैल रहा है। इसका उन्मूलन करने के लिए गाँधीजी के धार्मिक विचारों की अत्यधिक आवश्यकता व सार्थकता है। गाँधीजी देश में ऐसी बुनियादी शिक्षा व्यवस्था चाहते थे जिसमें व्यक्ति का शारीरिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक, नैतिक चरित्र का विकास हो उनका मानना था कि बच्चों को उनके घर से दूर करना असली शिक्षा से दूर करना है, क्योंकि बच्चे की प्रथम पाठशाला उसकी माँ एवं घर होता है जिसमें वह नैतिकता, सदाचार, प्रेम, परोपकार, सहयोग, दया आदि के गुणों को विकसित करता है लेकिन आज की शिक्षा सिर्फ ज्ञान विकसित करती है मानवीय गुणों का विकास नहीं करती जबकि वास्तविक शिक्षा वहीं है जिसमें मानवीय मूल्यों का विकास हो। शिक्षा में रोजगार पैदा करने का हुनर सिखाया जाये। बच्चों को अपनी जिम्मेदारी का एहसास दिलाया जाए। बच्चे पढ़ते हुए शारीरिक श्रम करें जिससे अपना खर्च चला सके। गाँधीजी ने शिक्षा को हमेशा शांति से जोड़कर देखा व शिक्षा ऐसी हो जो सत्य व अहिंसा के गुणों का विकास करे। मानव कल्याण व विश्व शांति की भावना विकसित करे। आज विद्यार्थी पढकर बड़ी–बड़ी उपाधि भी ले लेते है पर सामाजिक सरोकार से कई बार दूर हो जाते है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ उचित व अनुचित को पहचानने का जब तक बच्चों में हुनर विकसित नही होगा तब तक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अधूरा ही रहेगा। इसलिए आज आतंकवाद के उन्मूलन के लिए हमें गाँधीजी की शिक्षा की बहुत आवश्यकता है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति में नैतिक व मानवीय गुणों का विकास होगा, रोजगार मिलेगा, धार्मिक कट्टरता की भावना पैदा नही होगी, प्रेम व शांति का संदेश मिलेगा, असामाजिक तत्वों के चुंगल में नही आयेगा जिससे निश्चित रूप से आतंकी घटनाओं पर रोक लगेगी, शिक्षा के द्वारा व्यक्ति अपने परिवार को सुख, समाज को समृद्धि, देश दुनिया को शांति देगा तो आतंकवाद का उन्मूलन निश्चित है। आज बच्चे के शारीरिक श्रम की जगह कम्प्यूटर ने ले ली है इसका दुष्प्रभाव है कि हमारी युवा पीढी श्रम से जी चुराने लगी है, बेरोजगारी बढी है। हमारे नौजवान नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा के अभाव में गलत रास्ते पर चल रहे है जिनमे से कुछ नौजवान आतंकवादी गतिविधियों में शामिल हो रहे है। अतः आज हमें गाँधीजी की शिक्षा व्यवस्था की महत्ती आवश्यकता है जिससे की युवा पीढी को सही मार्ग पर लाया जा सके व आतंकवाद का उन्मूलन किया जा सके।

गाँधीजी राजनीति में नैतिक मूल्यों को महत्वपूर्ण स्थान देते है। उनका विचार था कि अहिंसा के आधार पर सच्चे लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की स्थापना करनी चाहिए व सत्ता का विकेन्द्रीकरण करना चाहिए। इसी भावना को ध्यान में रखकर भारत में पंचायती राज की स्थापना की। अतः लोकतांत्रिक व्यवस्था में व्यक्ति को अधिकार मिलेंगे, शासन में भागीदारी का अवसर मिलेगा, समाज का विकास होगा। ऐसे समाज में आतंकवादी गतिविधियों पर नियंत्रण लगेगा, अराजकता की स्थिति होने पर आतंकवाद बढ़ता है इसलिए आतंकवाद के नियंत्रण के लिए लोकतांत्रिक शासन व सत्ता का विकेन्द्रीकरण आवश्यक है। गाँधीजी राष्ट्रवादी थे लेकिन उग्र राष्ट्रवाद के समर्थक नहीं थे। आज उग्र राष्ट्रवाद की भावना अन्तर्राष्ट्रीय शांति के लिए बहुत बडी समस्या पैदा कर रही है। आज उग्र राष्ट्रवाद के नाम पर आतंकवाद फैलाया जा रहा है। गाँधीजी का विचार था कि राष्ट्रवाद, अहिंसा, विश्व शांति, प्रेम, मानव–कल्याण, विश्व–बन्धुत्व, नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों की भावना से ओतप्रोत हो। गाँधीजी ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना में विश्वास करते थे। वे अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना में अटूट विश्वास रखते थे। गाँधीजी का राष्ट्रवाद पश्चिमी विचारक मैकियावली की तरह आक्रामक व उग्र नही है। गाँधीजी सत्य व

अहिंसा के आधार पर राष्ट्रो में एकता व मैत्री भाव पैदा करना चाहते थे। अतः विश्व के सभी राष्ट्र गाँधीजी की राष्ट्रवाद व अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के विचारों को स्वीकार कर ले तो निश्चित रूप से आतंकवाद का उन्मूलन किया जा सकता है। गाँधीजी ऐसी सामाजिक व्यवस्था में विश्वास करते थे जिसमें किसी व्यक्ति के साथ अन्याय व शोषण नही हो। सभी को समान अवसर मिले समाज से छूआछूत का अन्त हो एवं साम्प्रदायिक सद्भावना बनी रहे। जात–पात का अन्त हो एवं दलितों व महिलाओं को समाज में उचित व समानता का अधिकार मिले। अतः गाँधीजी के विचार से समाज का उत्थान होगा, शोषण का अन्त होगा, जिससे निश्चित रूप से आतंकवाद का अन्त होगा क्योंकि आतंकवाद का एक प्रमुख कारण सामाजिक असमानता व शोषण भी है। विश्व में साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, सैनिक वाद, आतंकवाद, नस्लवाद, रंग भेदभाव, तानाशाही एवं निरंकुश शासन के खिलाफ चलाये गये आन्दोलन गाँधीजी के विचारों से प्रभावित है गाँधीजी से प्रेरणा लेने वाले मार्टिन लूथर किंग जूनियर (अमेरिका), नेल्सन मंडेला (दक्षिण अफ्रिका), दलाई लामा (तिब्बती धर्म गुरू), आंग सान सूकी (म्यामार), बराक ओबामा (अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति) आदि जैसे व्यक्तित्व गाँधी जी से अत्यधिक प्रभावित है। विश्व में महात्मा गाँधी एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने देश को आजादी दिलायी लेकिन आजादी के बाद सत्ता से अलग रहे। तंकवाद व हिंसा विश्व में अपने चरमोत्कर्ष रूप में दिख रही है जिसके समाधान के लिए चारों ओर गाँधीजी के विचारों की महत्ता व आवश्यकता अनुभव हो रही है एवं इस भीषण समस्या का स्थायी समाधान केवल गाँधीजी के सत्य, अहिंसा जैसे विचारों में दिखायी दे रहा है। गाँधीजी हथियारों व हिंसा के विरूद्ध, सत्य, अहिंसा व सत्याग्रह की बात कहते है। उनका विश्वास था कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है सच्चा भारत गाँवों में निवास करता है। अतः जब तक गाँवों का विकास नहीं होगा तब तक भारत का विकास नहीं होगा। गाँवों के विकास से लोगों का शहरों की ओर झुकाव कम होगा, शहरीकरण कम होगा, लोगों को स्वरोजगार के साधन उपलब्ध होंगे, बेरोजगारी, भुखमरी, गरीबी, अशिक्षा की समस्या दूर होगी। लोगों में नैतिकता, परोपकार, भाईचारा, प्रेम बढेगा। अतः ऐसे समाज की अगर स्थापना होगी तो निश्चित रूप से हिंसा व आतंकवादी घटनाऐं नही होगी। विश्व में कुछ समय में घटित आतंकवादी घटनाऐं जकार्ता (इंडोनेशिया) 14 जनवरी, 2016, ब्रेसेल्स (बेल्जियम) 22 मार्च 2016, नीस (फ्रांस) 14 जुलाई 2016, काबुल (अफगानिस्तान) 23 जुलाई 2016, तुर्की जनवरी 2017, मैनचेस्टर (ब्रिटेन) 23 मई 2017 लंदन ब्रिज (ब्रिटेन) 4 जून 2017, ईरान 7 जून 2017, सोमालिया 8 जून 2017 व भारत के पठानकोट (पंजाब) 2 जनवरी 2016, उरी (जम्मू–कश्मीर) 18 सितम्बर 2016 की प्रमुख आतंकी घटनाऐं है जिनके पीछे प्रमुख आतंकी संगठन आई.एस.आई.एस., तालिबान, अलकायदा, बोको हरम, अल नुसरा फ्रंट, लश्कर ए तैयवा, जेश – ए–मोहम्मद, जैयाह इस्लामिया, इंडियन मुजाहिद्दीन, अबू सय्याफ जैसे आतंकी गुटों का हाथ बताया जाता है। इन घटनाओं का अध्ययन करे तो यह निष्कर्ष निकलता है कि आतंकवादियों ने महानगरों व आधुनिक चकाचौध भरी दुनिया व सैनिक ठिकानों को निशाना बनाया है।

निष्कर्ष

आज आतंकवाद जैसी विश्व व्यापी समस्या के समाधान के लिए गाँधीजी के विचार बहुत आवश्यक है। गाँधीजी ने अपने विचारों से समाज को नयी दिशा, नये कार्यक्रम, नया दर्शन दिया। उन्होंने सामाजिक सुधार, अछूतोद्धार, ग्रामोत्थान, महिला सुधार, शराब बंदी, शिक्षा सुधार पर बल दिया। आज विश्व में आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता, उग्र राष्ट्रवाद, अलगाववाद, नव उपनिवेशवाद, क्षेत्रवाद, नक्सलवाद, नस्लीय भेदभाव, दलित व कमजोर वर्गों का दमन, साम्प्रदायिक हिंसा, महिलाओं का शोषण, मूल्यों का ह्रास, सत्ता का केन्द्रीयकरण, राजनीति में बढ़ती हिंसा, भ्रष्टाचार जैसे समस्याएँ बढती जा रही है। इन समस्याओं के सहारे आतंकवाद ओर तेजी से बढ रहा है। अतः इन सभी समस्याओं का समाधान गाँधीजी के विचारों में ही मिलता है। आज विश्व बारूद के ढेर पर खडा है। अत्याधुनिक हथियार, परमाणु बम, मिसाइल, जैविक बम तैयार कर लिये है, इन्ही हथियारों की आड में आज आतंकवाद बढ रहा है। आज विश्व का प्रत्येक राष्ट्र अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रहा है। इसलिए अपनी सुरक्षा के लिए लाखों करोडो डॉलर खर्च कर इन हथियारों का निर्माण कर रहा है। या विदेशों से आयात कर रहा है। जबकि देश की जनता गरीबी व भूख से मर रही है। आज विश्व के चन्द व्यक्तियों का पूँजी पर कब्जा है। आज प्रत्येक राष्ट्र अस्त्र–शस्त्रों की प्रतिस्पर्द्धा, सैन्य गति–विधियों पर बढता बजट, भयंकर गरीबी, बेरोजगारी, आर्थिक मंदी से पीडित है। बढता शहरीकरण, गाँवों से पलायन, ग्रामीण संस्कृति व मूल्यों का पतन, सामाजिक विकृति, सामाजिक संस्कृति का विखराव, व्यक्तिगत महत्तवाकांक्षा का बढना, सामूहिक परिवारों का टूटना, धर्म व देश भक्ति के नाम पर भोली जनता को गुमराह करना, बडे–बडे महानगरो, बडे औद्योगिक कारखाने व प्रतिष्ठान, बहुमंजिली आवासीय इमारते, विज्ञान की आधुनिक चका चौध भरा जीवन जीने का तरीका आदि ने मनुष्य को स्वार्थी, एकाकी, समाज से दूर व मानवीय गुणों से अलग कर दिया है। अतः आज मानव जाति के कल्याण, विश्व शांति व आतंकवादी रूपी दैत्य के उन्मूलन के लिए गाँधीजी के सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, प्रन्यास, धर्म, शिक्षा, सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक आदि विचारों की प्रासंगिकता व उपादेयता है। गाँधीजी ने कहा कि मानवीय समस्याओं का हल केवल हिंसा के आधार पर किया तो वर्तमान सभ्यता व संस्कृति का विनाश निश्चित है। गाँधीजी ने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का हल अहिंसा के माध्यम से निकालने का मार्ग बताया है। अतः अब विश्व के सभी राष्ट्रो को आतंकवाद के खिलाफ एक जुट होकर मुकाबला करना होगा। इसका मुकाबला एक मुल्क नही कर सकता है। इस विश्व व्यापी विभत्स समस्या का समाधान कोई एक अतिवादी दृष्टिकोण अपनाने से संभव नहीं है बल्कि गाँधीजी के विचार सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, आपसी सहयोग, विश्व बन्धुत्व व अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना, उत्कृष्ट उदार मानवीय मूल्य,

धार्मिक सद्भाव, नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा आदि से ही संभव है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *गाँधी, मोहनदास करमचंद, ''सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा'' नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद।*
2. *गाँधी, मोहनदास करमचंद,''हिन्द स्वराज''नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद।*
3. *शर्मा, गोविन्द प्रसाद,''भारतीय राजनीतिक चिन्तन'' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।*
4. *प्रताप सिंह,''गाँधीजी का दर्शन'' रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर।*
5. *कमल, के० एल०,''गाँधी चिन्तन''जयपुर पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।*
6. *चतुर्वेदी, मधुकर श्याम,''प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक''कॉलेज बुक हाउस, जयपुर।*
7. *महादेव प्रसाद,''महात्मा गाँधी का समाज दर्शन'' हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ।*
8. *फडिया, बी० एल०,''अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति : सिद्धान्त एवं समकालीन राजनीतिक मुद्दे।''साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।*
9. *इंडिया टूडे मैगजीन, विभिन्न अंक।*
10. *http://www.gandhism.net*
11. *http://www.ncert.nic.in*
12. *दैनिक भास्कर, दैनिक समाचार पत्र, जयपुर।*
13. *राजस्थान पत्रिका, दैनिक समाचार पत्र, जयपुर।*